आयुष-आधारित चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन की प्रथाओं, संभावनाओं तथा सामाजिक-आर्थिक प्रभाव के आकलन में अनुसंधान एवं विकास की अंतर्दृष्टि

वैश्विक स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य में प्रतिक्रियात्मक एवं रोग-केंद्रित स्वास्थ्य मॉडल से हटकर रोकथाम, वैयक्तिकृत चिकित्सा तथा समग्र स्वास्थ्य एवं कल्याण की ओर निर्णायक परिवर्तन देखा जा रहा है। यह परिवर्तन केवल दार्शनिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे आर्थिक कारक भी महत्वपूर्ण रूप से कार्य कर रहे हैं। वर्ष 2023 से 2024 के बीच वैश्विक वेलनेस अर्थव्यवस्था में 7.9% की वृद्धि हुई और यह 6.8 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के नए उच्च स्तर पर पहुँच गई, जबकि अकेले वेलनेस पर्यटन का मूल्य 984 बिलियन अमेरिकी डॉलर आँका गया। इस उल्लेखनीय विस्तार ने चिकित्सा की पारंपरिक प्रणालियों, विशेष रूप से आयुर्वेद, को समकालीन स्वास्थ्य एवं वेलनेस पारिस्थितिकी तंत्र में विश्वसनीय योगदानकर्ता के रूप में विशेष महत्व प्रदान किया है। भारत अब इस परिवर्तन के अग्रणी देशों में शामिल है। आयुर्वेद, योग, ध्यान, प्राकृतिक चिकित्सा तथा समग्र स्वास्थ्य पद्धतियों की प्राचीन और सुव्यवस्थित विरासत ने भारत को विश्व के प्रमुख वेलनेस पर्यटन स्थलों में से एक के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आयुष मंत्रालय और पर्यटन मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से की गई योजनात्मक पहलों ने इन पद्धतियों को वैश्विक स्तर पर पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके परिणाम उल्लेखनीय हैं: भारत यात्रा करने वाले अंतरराष्ट्रीय रोगियों की संख्या वर्ष 2020 में 1,82,945 से बढ़कर वर्ष 2024 में 6,44,387 हो गई। हाल के वर्षों में योग, आयुर्वेद और वेलनेस-आधारित उपचार इस वृद्धि में प्रमुख योगदानकर्ता बने हैं, जिससे भारत समग्र एवं साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य देखभाल के लिए एक वांछित गंतव्य के रूप में दृढ़ता से स्थापित हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने स्वास्थ्य एवं कल्याण के एक घटक के रूप में पारंपरिक चिकित्सा के महत्व पर निरंतर बल दिया है। साथ ही, संगठन ने अधिक सुदृढ़ वैज्ञानिक साक्ष्य, गुणवत्ता आश्वासन, सुरक्षा निगरानी तथा स्वास्थ्य प्रणालियों में इसके उपयुक्त एकीकरण की आवश्यकता को भी रेखांकित किया है।

हमारे सामने वास्तविक चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि आयुष-आधारित चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन सटीक वैज्ञानिक आधार और विश्वसनीय प्रभाव आकलन पर आधारित हो, अर्थात् मानकीकृत प्रोटोकॉल, मापनीय नैदानिक परिणाम, औषधि-सतर्कता (Pharmacovigilance) तथा सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का पारदर्शी एवं यथार्थपरक आकलन सुनिश्चित किया जाए। तभी यह क्षेत्र एक तेजी से विकसित होते व्यापारिक रुझानों से आगे बढ़कर वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था के एक परिपक्व, साक्ष्य-आधारित और सुदृढ़ स्तंभ के रूप में विकसित हो सकेगा।

आयुर्वेद की वैचारिक रूपरेखा में आहार-विनियमन, जीवनशैली के अनुकूलन, चिकित्सीय पद्धतियों, निवारक उपायों, आचार रसायन, मन-शरीर के समन्वय तथा वैयक्तिकृत नैदानिक चिकित्सा उपक्रमों का समन्वय किया गया है। इस व्यापकता के कारण यह उन लक्षण-केंद्रित दृष्टिकोणों से अलग पहचान रखता है, जो अनेक स्वास्थ्य-पर्यटन स्थलों में प्रमुख रूप से अपनाए जाते हैं। आयुष चिकित्सा पर्यटन, आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध तथा होम्योपैथी को पर्यटन के साथ एकीकृत करते हुए एक समग्र स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रस्तुत करता है, जो केवल अस्थायी या तात्कालिक उपचार के अलावा दीर्घकालिक स्वास्थ्य एवं कल्याण की अपेक्षा रखने वाले रोगियों को आकर्षित करता है। अन्य देशों की तुलना में भारत की विशिष्ट बढ़त इसकी चिकित्सीय परंपराओं की बद्धमूलता और प्राचीनता, आयुष मंत्रालय द्वारा विकसित नियामक परिपक्वता तथा सुदृढ़ पर्यटन अवसंरचना के समन्वित प्रभाव में निहित है। जो देश मुख्यतः वेलनेस पर्यटन को बढ़ावा देते हैं, वे प्रायः समुद्र तट या स्पा जैसी सुविधाओं को प्रमुखता से प्रस्तुत करते हैं; उनके पास एक सुसंगत चिकित्सा-दृष्टिकोण पर आधारित, औषधीय रूप से सक्रिय तथा बहुआयामी चिकित्सा पद्धतियों की ऐसी तुलनीय और संस्थागत रूप से समर्थित परंपरा का अभाव है। अतः भारत स्वयं को केवल एक रमणीय पर्यटन स्थल के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे गंतव्य के रूप में स्थापित कर सकता है, जहाँ चिकित्सीय उपक्रमों का नैदानिक दस्तावेजीकरण किया जाता हो, उपचार के परिणामों का व्यवस्थित रूप से आकलन किया जाता हो तथा ये चिकित्सा उपक्रम पारंपरिक चिकित्सा के स्वास्थ्य प्रणालियों में एकीकरण के संबंध में WHO द्वारा विकसित किए जा रहे मानकों के अनुरूप हों।

इस समृद्ध ज्ञान-परंपरा, नीतिगत समर्थन और वैश्विक स्तर पर बढ़ती मांग का समन्वय एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से यह समझने और प्रदर्शित करने की संभावनाएँ बढ़ती हैं कि सदियों पुरानी चिकित्सा प्रणाली समकालीन चिकित्सा पर्यटन के मानकों के अनुरूप मूल्यांकन किए जाने पर आधुनिक स्वास्थ्य अर्थव्यवस्था, स्थानीय आजीविका तथा सतत स्वास्थ्य देखभाल के विकास में किस प्रकार सार्थक योगदान दे सकती है।

वेलनेस पर्यटन और आयुर्वेद का अंतर्संबंध

स्वास्थ्य पर्यटन के विभिन्न स्वरूप वैश्विक पर्यटन में लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और कुछ देशों की आर्थिक प्रगति में भी इनका उल्लेखनीय योगदान है। तनाव प्रबंधन, स्वस्थ वृद्धावस्था, जीवनशैली से संबंधित विकारों, शारीरिक पुनर्वास, मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण तथा निवारक स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती रुचि ने सुव्यवस्थित वेलनेस कार्यक्रमों के लिए मांग में विस्तार किया है। अन्य वेलनेस पर्यटन स्थलों की तुलना में भारत की बढ़त केवल सतही आकर्षण पर नहीं, बल्कि इसकी संरचनात्मक विशेषताओं पर भी आधारित है। भारत एक सुसंगत चिकित्सा परंपरा को संस्थागत आधार के साथ प्रस्तुत करता है। इसमें समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जैव-विविधता, स्थापित आयुर्वेद संस्थान, प्रशिक्षित चिकित्सक तथा औषधीय पौधों के उपयोग की दीर्घकालिक परंपरा शामिल है। नीतिगत पहलों ने इस क्षेत्र को और सुदृढ़ किया है। “हील इन इंडिया” (Heal in

India) अभियान, 170 से अधिक देशों के लिए ई-मेडिकल वीज़ा तथा डिजिटल रूप से संचालित ऑनलाइन मेडिकल वैल्यू ट्रैवल (MVT) पोर्टल ने स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को अधिक सुव्यवस्थित किया है। अनेक राज्यों ने चिकित्सा पर्यटन के लिए आधारभूत संरचना विकसित की है। भारत में केरल, वाराणसी और ऋषिकेश आदि शहरों में आयुर्वेद एवं समग्र वेलनेस के प्रमुख केंद्रों के रूप में उभरे हैं, जबकि कर्नाटक सहित अन्य राज्य भी इसी प्रकार की पर्यटन एवं स्वास्थ्य-पर्यटन अवसंरचना को तेजी से विकसित कर रहे हैं। वैश्विक समर्थन और गुणवत्ता सुनिश्चितता को सुदृढ़ करने के प्रयासों के अंतर्गत, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 19 दिसंबर 2025 को भारत मंडपम में आयोजित द्वितीय WHO वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा शिखर सम्मेलन के दौरान "आयुष क्वालिटी मार्क" का शुभारंभ किया। आयुष क्वालिटी मार्क आयुष उत्पादों और सेवाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप एक आश्वासक संरचना प्रदान करता है, जिससे प्रामाणिक एवं मानकीकृत स्वास्थ्य सेवाओं की तलाश करने वाले अंतरराष्ट्रीय लाभार्थियों के बीच विश्वास को और मजबूत किया जा सकता है।

तथापि, आयुष-आधारित चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन का दीर्घकालिक महत्व केवल व्यावसायिक गति पर निर्भर नहीं हो सकता। इसके लिए स्वास्थ्य, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोणों से व्यवस्थित अध्ययन आवश्यक है, जिसमें नैदानिक एवं रोगी वर्णित परिणाम, सुरक्षा एवं औषधि-सतर्कता, समुदाय पर प्रभाव तथा सतत स्वास्थ्य देखभाल के मॉडल शामिल हों। केवल इस प्रकार के बहुआयामी मूल्यांकन के माध्यम से ही आयुष, पर्यटन, निवारक स्वास्थ्य देखभाल और वेलनेस अर्थव्यवस्था का समन्वय अपनी वास्तविक संभावनाओं को साकार कर सकता है और व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं कल्याण, स्थानीय आजीविका तथा वास्तव में सतत स्वास्थ्य देखभाल में सार्थक योगदान दे सकता है।

स्वास्थ्य-प्रणाली में सहभागिता के अवसर

पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में भारत की अंतरराष्ट्रीय सहभागिता तथा जामनगर में WHO ग्लोबल ट्रेडिशनल मेडिसिन सेंटर (GTMC) की स्थापना ने वैश्विक स्तर पर पारंपरिक चिकित्सा की संस्थागत उपस्थिति को और सुदृढ़ किया है। यह केंद्र अनुसंधान को आगे बढ़ाने, ज्ञान के आदान-प्रदान को सुगम बनाने, जैव-विविधता के संरक्षण तथा ऐसी साझेदारियों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, जो लोक स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय को गति प्रदान कर सकें। बढ़ती वैश्विक रुचि के बावजूद, आयुर्वेद-आधारित चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन के व्यापक प्रभावों से संबंधित साक्ष्य विभिन्न स्रोत, जैसे पर्यटन संबंधी प्रतिवेदन, रोगी सर्वेक्षण, अवलोकनात्मक अध्ययन, संस्थागत आकलन तथा नैदानिक अनुसंधान - अव्यवस्थित रूप में हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इन विभिन्न साक्ष्यों को एकीकृत करते हुए न केवल नैदानिक परिणामों और सुरक्षा का, बल्कि रोगी अनुभव, देखभाल की गुणवत्ता, चिकित्सकों की दक्षता, सेवा मानकों तथा सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का भी व्यवस्थित रूप से दस्तावेजीकरण किया जाए। इस प्रकार का समग्र साक्ष्य-आधार विश्वसनीय एवं रुग्ण-केंद्रित आयुष पर्यटन मॉडल के विकास के लिए अधिक सुदृढ़ आधार प्रदान कर सकता है।

आयुर्वेद के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार के साथ गुणवत्ता और नैदानिक सुशासन का महत्व भी लगातार बढ़ रहा है। वर्ष 2018 में हेल्थ सेक्टर स्किल काउंसिल (HSSC) के अंतर्गत समर्पित आयुष उप-परिषद (Ayush Sub-Council) की स्थापना तथा वर्ष 2021 से आयुष से संबंधित विभिन्न भूमिकाओं में 37,000 से अधिक व्यक्तियों के प्रमाणन जैसी पहलें कार्यबल की क्षमता और सेवा गुणवत्ता पर बढ़ते जोर को दर्शाती हैं। इसके साथ ही, सूचित सहमति, नैदानिक दस्तावेजीकरण, औषधि-सतर्कता, प्रतिकूल घटनाओं का प्रतिवेदन, रुग्ण सुरक्षा तथा गुणवत्ता आश्वासन के लिए उपयुक्त और प्रभावी प्रणालियों का विकास एवं कार्यान्वयन भी आवश्यक है।

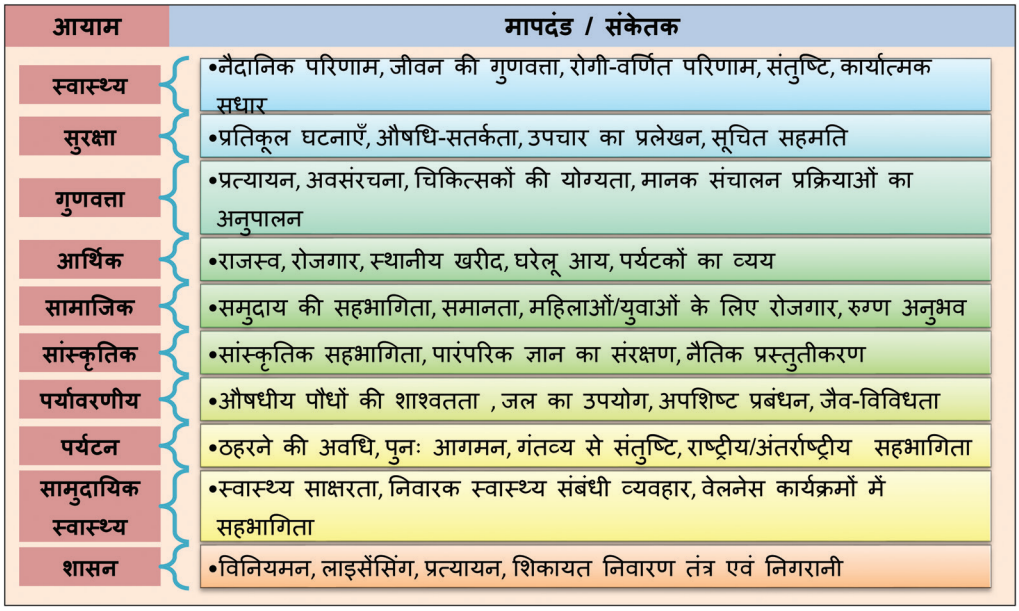
आयुष पर्यटन का स्थानीय संस्कृति और समुदायों के साथ भी घनिष्ठ संबंध है। पर्यटकों को पारंपरिक खाद्य प्रणालियों, औषधीय पौधों, स्थानीय प्रथाओं, भाषाओं तथा ज्ञान परंपराओं से परिचित होने का अवसर मिल सकता है। जहाँ पर्यटन सांस्कृतिक आदान-प्रदान और स्थानीय आजीविका को बढ़ावा दे सकता है, वहीं इससे सांस्कृतिक अखंडता, बौद्धिक संपदा, नैतिक व्यवसायीकरण, समुदाय की सहभागिता तथा लाभों के न्यायसंगत वितरण से जुड़े प्रश्न भी उत्पन्न होते हैं। अतः भविष्य के अनुसंधान में केवल यह आकलन करना पर्याप्त नहीं होगा कि आयुष पर्यटन गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं का अनुभव प्रदान करता है या नहीं, बल्कि यह भी अध्ययन किया जाना चाहिए कि इसका विस्तार उन समुदायों और ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण, सुदृढ़ीकरण और शाश्वत विकास में योगदान कर रहा है या नहीं, जिन पर यह पर्यटन आधारित है।

आयुष चिकित्सा पर्यटन के लिए साक्ष्य-आधारित संरचना का निर्माण

पर्यटन संबंधी आँकड़े सामान्यतः पर्यटन के मात्रात्मक पहलुओं, जैसे पर्यटकों की संख्या, ठहरने की अवधि, व्यय तथा अधिभोग दरों को दर्शाते हैं। हालांकि, ये आँकड़े स्वास्थ्य एवं वेलनेस पर्यटन के स्वास्थ्य, कल्याण, पर्यावरणीय, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक आयामों को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं कर सकते। इसलिए, पर्यटन संबंधी आँकड़ों के साथ-साथ बहुआयामी आकलन संरचना को लागू करने के लिए एक व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रम आवश्यक है। इस उद्देश्य के लिए मिश्रित-पद्धति अनुसंधान विशेष रूप से उपयुक्त हो सकता है। मात्रात्मक आँकड़े मापनीय परिवर्तनों और उनके बीच के संबंधों को स्थापित करने में सहायता कर सकते हैं, जबकि गुणात्मक साक्षात्कार एवं फोकस ग्रुप डिस्कशन रोगियों के अनुभवों, चिकित्सकों के दृष्टिकोण, समुदाय की धारणाओं तथा सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं को समझने में सहायता करेंगे, जिन्हें केवल संख्यात्मक संकेतकों के माध्यम से पर्याप्त रूप से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। चित्र 1 में एक साक्ष्य-आधारित संरचना प्रस्तावित की गई है। पर्यटन मंत्रालय द्वारा चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन के लिए राष्ट्रीय रणनीति एवं रोडमैप तैयार किया गया है। प्रस्तावित संरचना इस रोडमैप के अनुरूप है तथा SWOT विश्लेषण में सामने आई कमियों को संबोधित करने का प्रयास करता है।

आयुष चिकित्सा-पर्यटन पारिस्थितिकी तंत्र का एकीकरण

वैश्विक मेडिकल वैल्यू ट्रैवल व्यापार, जिसका वर्ष 2022 में अनुमानित मूल्य लगभग 115.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, के वर्ष 2030 तक बढ़कर 286.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है, जो लगभग 10.8% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) को दर्शाता है। भारत ने इस विस्तार में स्वयं को एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में



चित्र 1: आयुष चिकित्सा पर्यटन के वैज्ञानिक आकलन के लिए प्रस्तावित संरचना मॉडल

स्थापित किया है। भारत का चिकित्सा पर्यटन व्यापार अकेले वर्ष 2025 में अनुमानतः 8.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है और वर्ष 2030 तक इसके 16.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है। इस विकास की दिशा पर नीतिगत स्तर पर भी ध्यान दिया गया है। केंद्रीय बजट 2025–26 में इस क्षेत्र के लिए अवसंरचना को सुदृढ़ करने, कौशल विकास तथा यात्रा सुविधाओं को बेहतर बनाने हेतु विशेष रूप से ₹2541.06 करोड़ का प्रावधान किया गया। यह संकेत देता है कि चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन को अब रोजगार-आधारित आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में देखा जा रहा है। अतः आयुष-आधारित चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन के भविष्य के विकास को पारंपरिक चिकित्सा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यटन, वैज्ञानिक अनुसंधान, स्थानीय आर्थिक विकास तथा पर्यावरणीय स्थिरता के संगम के रूप में देखा जाना चाहिए। आयुष के लिए यह ऐसे गंतव्यों के विकास का अवसर प्रदान कर सकता है, जहाँ साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य देखभाल, पारंपरिक ज्ञान, निवारक स्वास्थ्य पद्धतियाँ और सामुदायिक आजीविका एक साथ सह-अस्तित्व में रह सकें। नीतिगत दृष्टिकोण से इसके लिए यह आवश्यक है कि आयुर्वेद संस्थानों की संकल्पना और उन्हें उपलब्ध कराए जाने वाले संसाधनों के दृष्टिकोण में एक सुविचारित परिवर्तन किया जाए। उपयुक्त अवसंरचना, प्रशिक्षित मानव संसाधन तथा स्पष्ट संस्थागत दायित्व के साथ ये केंद्र एक साथ चिकित्सा सुविधाओं, अनुसंधान केंद्रों, शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदाताओं, औषधीय पौधों के संरक्षण के केंद्रों तथा सामुदायिक सहभागिता के मंचों के रूप में कार्य कर सकते हैं। यह मॉडल इन संस्थानों को केवल आने वाले रोगियों को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने वाले केंद्रों के रूप में देखने की अपेक्षा अधिक सतत और व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

फिर भी, इस पूरे प्रयास की विश्वसनीयता अंततः उत्साह पर नहीं, बल्कि साक्ष्यों पर निर्भर करेगी। जैसे-जैसे यह क्षेत्र विस्तार प्राप्त करेगा, नीतिगत स्तर पर यह सुनिश्चित करना आवश्यक होगा कि साक्ष्य की गुणवत्ता भी उसी अनुपात में सुदृढ़ हो। इसके लिए व्यवस्थित परिणाम मापन, पारदर्शी प्रतिवेदन, सुदृढ़ सुरक्षा निगरानी, औपचारिक प्रत्यायन, नैतिक रूप से संचालित अनुसंधान तथा सार्थक सामुदायिक सहभागिता आवश्यक होंगे। यह केवल एक प्रशासनिक औपचारिकता नहीं है; बल्कि यही वह तंत्र है जिसके माध्यम से आयुर्वेद अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी वैज्ञानिक विश्वसनीयता स्थापित और बनाए रख सकता है। साथ ही, इसके माध्यम से "वेलनेस पर्यटन" को केवल अच्छी तरह से प्रचारित अनुभव के अलावा स्वास्थ्य परिणामों पर केंद्रित वैश्विक स्वास्थ्य अर्थव्यवस्था के एक वैध और महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्ष एवं भावी दिशा

आयुष-आधारित चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन के अगले चरण में पर्यटन-आधारित विस्तार से आगे बढ़कर साक्ष्य-आधारित एवं गुणवत्ता-केंद्रित विकास की दिशा में आगे बढ़ना आवश्यक है। इसके लिए नैदानिक परिणामों, सुरक्षा, देखभाल की गुणवत्ता, रोगी अनुभव, आर्थिक एवं सामाजिक लाभ, सांस्कृतिक प्रभाव तथा पर्यावरणीय स्थिरता से संबंधित विश्वसनीय साक्ष्य आवश्यक होंगे। मानकीकृत दस्तावेजीकरण, परिणामों की निगरानी, औषधि-सुरक्षाविज्ञान, उपयुक्त प्रत्यायन तथा सुदृढ़ नैदानिक शासन रोगियों, चिकित्सकों, संस्थानों तथा अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों के बीच विश्वास स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। आयुष पर्यटन के लाभ केवल व्यक्तिगत आगंतुकों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों तक सीमित नहीं होने चाहिए। सामुदायिक सहभागिता, स्थानीय आजीविका, औषधीय पौधों की खेती, पारंपरिक ज्ञान तथा स्थानीय स्तर पर संचालित स्वास्थ्य एवं वेलनेस पहलों पर अधिक जोर देने से यह सुनिश्चित करने में सहायता मिल सकती है कि पर्यटन उन समुदायों और पारिस्थितिक तंत्रों के विकास में योगदान दे, जो इन परंपराओं को बनाए रखने में सहायक हैं। भविष्य में आयुष, स्वास्थ्य, पर्यटन, पर्यावरण, अनुसंधान संस्थानों तथा स्थानीय समुदायों के बीच समन्वित कार्रवाई आवश्यक होगी। अनुसंधान एवं डेटा प्रणालियों में निवेश, स्पष्ट गुणवत्ता मानक, कुशल मानव संसाधन तथा अंतर्राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा पहलों के साथ समन्वय, जिम्मेदार विकास के लिए सुदृढ़ आधार प्रदान कर सकते हैं। अंततः, आयुष-आधारित चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन की सफलता का आकलन केवल आगंतुकों की संख्या से नहीं, बल्कि देखभाल की गुणवत्ता एवं सुरक्षा, साक्ष्यों की मजबूती, सामुदायिक लाभ, शाश्वत आजीविका तथा सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग के आधार पर किया जाना चाहिए।

Ayush-based medical and wellness tourism: Research and development insights into practices, scope, and assessment of socio-economic impact

The global healthcare landscape is witnessing a decisive pivot away from reactive, disease-centric models toward prevention, personalization, and holistic well-being.[1] This is not merely philosophical; it is strongly driven by economics. Between 2023 and 2024, the global wellness economy grew by 7.9% and reached a new peak of $6.8 trillion, with wellness tourism alone valued at $984 billion.[1] This remarkable expansion has brought traditional systems of medicine, particularly Ayurveda, into sharp focus as credible contributors to contemporary health and wellness ecosystems. India now stands at the forefront of this movement. Its ancient and well-documented legacy of Ayurveda, Yoga, meditation, naturopathy, and holistic practices has helped establish the country as one of the world's leading destinations for wellness tourism. Strategic initiatives jointly undertaken by the Ministry of Ayush and the Ministry of Tourism have been instrumental in reviving and promoting these systems on the global stage.[2] The results are striking: the number of international patients visiting India rose from 182,945 in 2020 to 644,387 in 2024. In recent years, Yoga, Ayurveda, and wellness-based therapies have become major contributors to this growth, firmly positioning India as a preferred destination for holistic, evidence-based care.[3] The World Health Organization (WHO) has increasingly emphasized the importance of traditional medicine as a component of health and well-being, while also highlighting the need for stronger evidence, quality assurance, safety monitoring, and appropriate integration within health systems.[4]

The real challenge before us is to ensure that Ayush-based medical and wellness tourism is grounded in rigorous science and credible impact assessment, *viz.*, standardized protocols, measurable clinical outcomes, pharmacovigilance, and honest socio-economic accounting. Only then can it evolve from a thriving market trend into a mature, evidence-driven pillar of global health.

Ayurveda's conceptual framework weaves together dietary regulation, lifestyle optimization, therapeutic modalities, preventive strategies, behavioral guidance, mind–body integration, and personalized clinical interventions. Such breadth distinguishes it from the more symptom-oriented approaches that dominate many health-tourism destinations. Ayush medical tourism, by integrating Ayurveda, Yoga, Naturopathy, Unani, Siddha, and Homeopathy with travel, offers a holistic package that appeals to patients seeking lasting well-being rather than episodic treatment. Compared with other countries, India's advantage lies in the depth and antiquity of its therapeutic repertoire, the regulatory maturity of the Ministry of Ayush, and the synergistic pull of a well-established tourism infrastructure. Nations that pursue wellness tourism primarily market beach or spa experiences; they lack a comparable, institutionally supported tradition of pharmacologically active, multi-modal therapies anchored in a coherent medical ontology. Consequently, India can position itself not merely as a scenic retreat but as a destination where interventions are clinically documented, outcome-tracked, and aligned with the WHO's emerging standards for traditional medicine integration.

This confluence of deep-seated knowledge, policy support, and rising global demand opens a rare opportunity, to demonstrate how a centuries-old system can contribute to modern health economics, local livelihoods, and sustainable healthcare models when measured against the benchmarks of contemporary medical tourism.

Wellness Tourism Interface and Ayurveda

The various forms of health tourism are playing an increasingly important role in world tourism, and this is also true of the economic performance of some countries.[5] The growing interest in stress management, healthy aging, lifestyle-related disorders, physical rehabilitation, mental well-being, and preventive health has created an expanding market

© 2026 Journal of Research in Ayurvedic Sciences | Published by Wolters Kluwer - Medknow

for structured wellness programmes.[6] India's advantage over other wellness destinations is structural rather than superficial. Unlike settings that market primarily spa or beach-based retreats, India pairs a coherent medical tradition with institutional depth; cultural heritage, biodiversity, established Ayurveda institutions, trained practitioners, and long-standing medicinal-plant traditions. Policy has reinforced this: the Heal in India campaign, e-medical visas for more than 170 countries,[7] and the digitalized Online Medical Value Travel (MVT) Portal have streamlined access. Many states anchor clinical medical tourism; Kerala, Varanasi, and Rishikesh lead in Ayurveda and holistic wellness, with Karnataka and other states rapidly building comparable infrastructure tourism infrastructure.[3,8] As part of the efforts to reinforce global confidence and quality assurance, Prime Minister Shri Narendra Modi recently launched the "Ayush Quality Mark" on December 19, 2025 at Bharat Mandapam during the Second WHO Global Summit on Traditional Medicine. The Ayush Quality Mark provides an internationally aligned assurance framework for Ayush products and services, further strengthening trust among international seekers of authentic and standardized care.[4]

Yet the long-term significance of Ayush-based medical and wellness tourism cannot rest on commercial momentum. It demands systematic examination through health, social, and economic lenses - clinical and patient-reported outcomes, safety and pharmacovigilance, community impact, and sustainable care models. Only through such multidimensional scrutiny can the convergence of Ayush, tourism, preventive healthcare, and wellness economics fulfill its promise: contributing meaningfully to individual well-being, local livelihoods, and genuinely sustainable healthcare.

Health-System Engagement Opportunities

India's international engagement in traditional medicine, along with the establishment of the WHO Global Traditional Medicine Center in Jamnagar, has strengthened the global institutional presence of traditional medicine.[9] The Center focuses on advancing research, facilitating knowledge exchange, conserving biodiversity, and fostering partnerships to catalyze ancient wisdom and modern science for the health and well-being of people and planet.[10] Despite this growing interest, evidence on the wider impact of Ayurveda-based medical and wellness tourism remains scattered across tourism reports, patient surveys, observational studies, institutional assessments, and clinical research. There is a need to bring these strands together and systematically document not only clinical outcomes and safety, but also patient experience, quality of care, practitioner competency, service standards, and social and economic impact. This would provide a stronger evidence base for developing credible and patient-centered models of Ayush tourism.

The internationalization of Ayurveda also makes quality and clinical governance increasingly important. Initiatives such as the Health Sector Skill Council's dedicated Ayush Sub-Council, established in 2018, and the certification of more than 37,000 individuals across Ayush-related roles since 2021, reflect the growing emphasis on workforce capacity and service quality. This needs to be complemented by appropriate systems for informed consent, clinical documentation, pharmacovigilance, adverse-event reporting, patient safety, and quality assurance.[4]

Ayush tourism is also closely connected to local culture and communities. Visitors may encounter traditional food systems, medicinal plants, local practices, languages, and knowledge traditions. While tourism can support cultural exchange and local livelihoods, it also raises questions about cultural integrity, intellectual property, ethical commercialization, community participation, and fair distribution of benefits. Future research should therefore examine not only whether AYUSH tourism delivers quality healthcare experiences, but also whether its growth supports and sustains the communities and knowledge systems on which it is built.

Building an Evidence Architecture for AYUSH Medical Tourism

The tourism statistics generally capture quantitative aspects of tourism, such as visitor numbers, length of stay, expenditure, and occupancy rates,[11] and may not adequately capture the health, wellness, environmental, social, cultural, and economic dimensions of health and wellness tourism. Therefore, a systematic and scientific research program is essential for implementing a multidimensional assessment framework along with tourism statistics. A mixed-methods research design would be particularly appropriate. Quantitative data could establish measurable changes and associations, while qualitative interviews and focus group discussions could capture patient experiences, practitioner perspectives, community perceptions, and socio-economic realities that cannot be adequately represented by numerical indicators alone. An evidence architecture model is proposed in the Figure 1. The Ministry of Tourism has formulated a National Strategy and Roadmap for Medical and Wellness Tourism, and the proposed framework align with this roadmap in addressing the weaknesses presented in the strengths, weaknesses, opportunities, and threats analysis.[12]

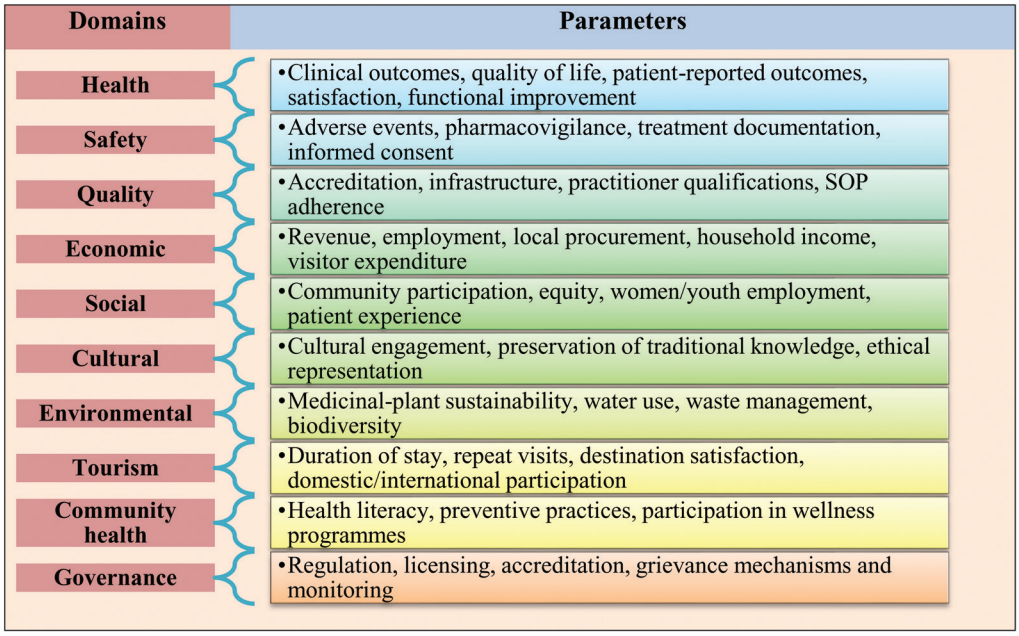


Figure 1: Proposed architecture model for scientific assessment of AYUSH medical tourism

Integration of Ayush Medical-Tourism Ecosystem

The global MVT market, valued at roughly USD 115.6 billion in 2022, is projected to reach USD 286.1 billion by 2030, growing at a compound annual growth rate of approximately 10.8%. India has positioned itself as one of the most consequential players in this expansion and its medical tourism market alone is estimated at USD 8.7 billion in 2025, with projections of USD 16.2 billion by 2030.[13] This trajectory has not gone unnoticed at the policy level: The Union Budget 2025–26 allocated ₹2541.06 crore specifically to strengthen infrastructure, skill development, and travel facilitation for this sector; a clear signal that medical and wellness tourism is now viewed as a serious driver of employment-led growth.[14] Therefore, the future development of Ayush-based medical and wellness tourism should be viewed as an intersection of traditional medicine, public health, tourism, scientific research, local economic development, and environmental sustainability.[15] For Ayush, this can create an opportunity to establish destinations where evidence-based healthcare, traditional knowledge, preventive health practices, and community livelihoods coexist. From a policy standpoint, this requires a deliberate shift in how Ayurveda institutions are conceived and resourced. With the right infrastructure, trained personnel, and institutional mandate, these centers can function simultaneously as treatment facilities, research hubs, education providers, sites of medicinal-plant conservation, and platforms for community engagement; a far more sustainable model than treating them purely as service-delivery points for visiting patients.

The credibility of this entire enterprise, however, will ultimately rest on evidence, not enthusiasm. As the sector scales, policy must ensure that the quality of evidence scales with it, through systematic outcome measurement, transparent reporting, robust safety surveillance, formal accreditation, ethically conducted research, and meaningful community participation. This is not a bureaucratic formality; it is the mechanism by which Ayurveda earns and retains scientific credibility on international platforms, and by which "wellness tourism" evolves into a legitimate, health-outcomes-driven pillar of the global health economy rather than a well-marketed experience.

Conclusion and Way Forward

The next phase of Ayush-based medical and wellness tourism should move from tourism-led expansion to evidence-led and quality-focused development. This requires reliable evidence on clinical outcomes, safety, quality of care, patient experience, economic and social benefits, cultural impact, and environmental sustainability. Standardized documentation, outcome monitoring, pharmacovigilance, appropriate accreditation, and stronger clinical governance will be important to establish confidence among patients, practitioners, institutions, and international partners.

The benefits of Ayush tourism should also extend beyond individual visitors and commercial establishments. Greater emphasis on community participation, local livelihoods, medicinal-plant cultivation, traditional knowledge,

and locally rooted health and wellness initiatives can help ensure that tourism contributes to the communities and ecosystems that sustain these traditions.

Going forward, coordinated action across Ayush, Health, Tourism, Environment, research institutions, and local communities will be essential. Investment in research and data systems, clear quality standards, skilled human resources, and alignment with international traditional-medicine initiatives can provide the foundation for responsible growth. Ultimately, the success of Ayush-based medical and wellness tourism should be reflected not simply in visitor numbers, but in the quality and safety of care, strength of evidence, community benefits, sustainable livelihoods, and responsible use of cultural and natural resources.

Declaration of generative AI

The authors declare that they have used ChatGPT (OpenAI) solely for language editing, grammar correction, and improving the readability of the manuscript. The authors carefully reviewed and verified the content after AI-assisted editing.

Financial support and sponsorship

Nil.

Conflicts of interest

There are no conflicts of interest.

Narayanam Srikanth
Central Council for Research in Ayurvedic Sciences,
Ministry of Ayush, Government of India, New Delhi, Delhi, India

Address for correspondence: Dr. Narayanam Srikanth,
Central Council for Research in Ayurvedic Sciences, Ministry of Ayush,
Government of India, New Delhi 110058, Delhi, India.
E-mail: ccras_tec@nic.in

References

1. World Health Organization. People-Centred and Integrated Health Services: An Overview of the Evidence: Interim Report. Available from: https://iris.who.int/server/api/core/bitstreams/17ef41ee-03be-4421-925a-1cf24e623de0/content. [Last accessed on 17 Sep 2026].
2. Global Wellness Institute. Wellness Economy Statistics and Facts. Available from: https://globalwellnessinstitute.org/press-room/statistics-and-facts/. [Last accessed on 18 Sep 2026].
3. Jangid A, Chaudhary AK, Sanyal S. Wellness as a Development Tool: Enhancing Indian Destinations through Tourism. In: Parashar A, Albattat A, Agarwal P, Chandel PS, editors. Nature, Wellness and Sustainability in Health Tourism. 1st ed. Leeds (UK): Emerald Publishing Limited; 2026. p. 77-102.
4. Press Information Bureau, Government of India. Medical and Wellness Tourism in India. Available from: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2217203&reg=6&lang=1. [Last accessed on 22 Sep 2026].
5. Wong YM, Ahn S, Bana A, Dua PK, Eggers R, Kuruvilla S, *et al*. Policy implications of WHO's global traditional medicine strategy 2025–2034. Bull World Health Organ 2025;103:715-21.
6. Csirmaz E, Pető PK. International trends in recreational and wellness tourism. Procedia Econ Financ 2015;32:755-62.
7. Alizadeh Shirazi Nezhad A, Ebrahimbabaei A. Lifestyle medicine and preventive strategies for chronic diseases: A narrative review. J Adv Biomed Sci 2026;16:114-33.
8. Chandrasekhar S. Healing and prosperity: India-Japan's path to collaborative growth. Econ Cult Hist Jpn Spotlight Bimon 2025;44:36.
9. Patil A, Raj P, Gowri Shankar R, Lakshmi RB. Cultivating Wellness: Synergy of Emerging Technologies in Spiritual and Wellness Tourism. In: Tyagi PK, Nadda V, Singh AK, editors. Meaningful Tourism: Strategies and Future Development. Leeds (UK): Emerald Publishing Limited; 2025. p. 145-162.
10. Press Information Bureau, Government of India. WHO Global Traditional Medicine Centre (GTMC), Jamnagar: A Centre of Global Wellness to Bolster Evidence-Based Research, Training and Awareness for Traditional Medicine. Available from: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2113864&reg=48&lang=2. [Last accessed on 18 Sep 2026].
11. World Health Organization. WHO Global Traditional Medicine Centre. Available from: https://www.who.int/teams/who-global-traditional-medicine-centre/overview. [Last accessed on 17 Sep 2026].
12. Latham J, Edwards C. The Statistical Measurement of Tourism. In: Cooper C, editor. Aspects of Tourism: Classic Reviews in Tourism. 1st ed. New South Wales (Australia): Channel View Publications; 2003. p. 55-76.
13. Ministry of Tourism, Government of India. National Strategy and Roadmap for Medical and Wellness Tourism. Available from: https://master-tourism.digifootprint.gov.in/static/uploads/2025/06/9ae0ce6aef0d8acba0daac54dfc652c6.pdf. [Last accessed on 22 Sep 2026].
14. Press Information Bureau, Government of India. Medical and Wellness Tourism in India. Available from: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2257447&reg=48&lang=2. [Last accessed on 22 Sep 2026].
15. Ministry of Tourism. Tourism as a Key Driver for Employment and Growth Budget 2025-26 Focuses on Infrastructure, Medical Tourism, and Heritage Conservation. Available from: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2099519&reg=48&lang=2. [Last accessed on 22 Sep 2026].

Access this article online	
Quick Response Code:	
	Website: https://www.ovid.com/jnls/jras
	DOI: 10.4103/jras.jras_316_26

Submitted: 18-Sep-2026 **Revised:** 06-Oct-2026
Accepted: 08-Oct-2026 **Published:** 26-Oct-2026

This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-NoDerivatives 4.0 License (CC BY-NC-ND), where it is permissible to download and share the work provided it is properly cited. The work cannot be changed in any way or used commercially without permission from the journal.

For reprints contact: WKHLRPMedknow_reprints@wolterskluwer.com

How to cite this article: Srikanth N. Ayush-based medical and wellness tourism: Research and development insights into practices, scope, and assessment of socio-economic impact. J Res Ayurvedic Sci 2026;10:223-30.